Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, NOV-DEC, 2018, VOL- 6/48

आचार्य नरेन्द्र देव का राजनीतिक चिन्तन

Kairo Kant Ujala, Ph. D.

Associate Professor - Political Science, Government P.G. College , Magarahan, MIRZAPUR- U.P. E-mail : ujalakk@gmail.com

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

आचार्य नरेन्द्र देव का जन्म उत्तर प्रदेश प्रान्त के सीतापुर में 30 अक्टूबर सन् 1889 में कार्तिक शुक्ला अष्टमी को एक सम्भ्रान्त वकील परिवार में हुआ था। आपके पिता श्री बल्देव प्रसाद जी अपने समय के बड़े वकीलों में गिने जाते थे। जो अत्यन्त धार्मिक वृत्ति के थे एवं कॉंग्रेस तथा सामाजिक संगोष्ठियों के कामों में दिलचस्पी रखते थे। इस नाते उपदेशक, साधु सन्यासी और पंडित उनके घर आया जाता करते थे। सम्प्रति बचपन में ही स्वामी रामतीर्थ, पं. मदनमोहन मालवीय, पंडित दीनदयालु शर्मा आदि के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। पिताजी के प्रभाव से नरेन्द्र देव (बचपन का नाम अविनाशी लाल) के मन में भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग जगा। कहना उपयुक्त ही है कि आचार्य नरेन्द्र देव को भारतीय संस्कृति से अटूट प्रेम अपने पिताजी से विरासत में मिला जिससे आपको राष्ट्र धर्म, राष्ट्र सेवा और राष्ट्र निर्माण की सजीव प्रेरणा मिली। सन् 1902 में नरेन्द्र देव शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूल में प्रविष्ट हुए। सन् 1905 में उन्हें बँगला भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान हो गया था। उनके शिक्षक उन्हें कृतिवास की रामायण बड़े ध्यान से सुनाया करते थे। सन् 1906 में आपने ऐन्ट्रेन्स की परीक्षा पास की। सन् 1904 में उन्हें मालवीय जी से स्नेह पाने का प्रथम अवसर प्राप्त हुआ। ऐन्ट्रेन्स करने के बाद वह उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद गए। आपने म्योर सेन्ट्रल कालेज इलाहाबाद; जो कि राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र था, में प्रवेश लिया। हिन्दू बोर्डिंग हाउस में रहने के साथ–साथ आप राजनैतिक कार्यों में रूचि लेने लगे थे। सन् 1905 में बंगाल–विभाजन की घटना ने अंग्रेजों की न्यायप्रियता के प्रति अविश्वास की भावना जागृत कर दी थी। एक सचेष्ट दर्शन ने नाते नरेन्द्र देव ने सन् 1905 के अधिवेशन में सक्रिय सहभागिता की। म्योर कालेज से स्नातक होने के बाद आप पुरातत्व पढ़ने के लिए काशी चले गए। सन् 1905 में

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आप कांग्रेस में शामिल हुए। उस समय कांग्रेस में 'नरम दल–गदम दल का संघर्ष' चल रहा था। आप बहुत जन्द 'गरम दल के समर्थक' हो गए और स्वदेशी का संकल्प लिया; जिसकी बजह से वे कोई विदेशी वस्तु नहीं खरीदते थे। सन् 1913 में आपने काशी के क्वीन्स कालेज से स्नातकोत्तर (एम.ए.) किया; तदुपरान्त सन् 1915 में विधि स्नातक हुए। विधि स्नातक के रूप में आपका आगमन फैजाबाद न्यायालय में वकालत करने के लिए हुआ। इस कार्य को करते हुए आपने सक्रिय राजनीति में अपनी सेवाएं देना आरम्भ कर दिया। सन् 1916 में **'होमरूल लीग'** की एक शाखा फैजाबाद में खोली गयी; जिसमें आप मंत्री (सचिव) नियुक्त किए गए। गाँधीजी असहयोग और खिलाफ आन्दोलनों में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया। असहयोग की पुकार पर आपने अपनी वकालत छोड़ दी। नरेन्द्र देव का लगभग 20 वर्ष से अधिक समय काशी विद्यापीठ में व्यतीत हुआ। पहले अध्यापक के रूप में, फिर प्राचार्य। आप दो बार उपकुलपति बने। आपने लखनऊ और बनारस विश्वविद्यालय में कुलपति रहते हुए पठन, पाठन, लेखन के साथ– साथ राजनीति में भी सक्रिय भागीदारियाँ निभायी। सन् 1936 में नेहरू जी ने आचार्य नरेन्द्र देव को कांग्रेस कार्य समिति का सदस्य बना दिया। सन् 1939 में आपने बिहार के गया जिला में प्रसिद्ध किसान आन्दोलन (सम्मेलन) की अध्यक्षता की। अहमदाबाद की जेल में नेहरू जी के साथ आपका सन् 1942 से 1945 तक का समय व्यतीत हुआ। सन् 1947 में कांग्रेस की अध्यक्षता हेतु आचार्य नरेन्द्र देव जी का नाम उभरा किन्तु बल्लभ भाई पटेल के विरोध के कारण ऐसा न हो सका। सन् 1954 में कांग्रेस की अध्यक्षता आचार्य नरेन्द्र देव के द्वारा की गयी। सन् 1955 में आपने प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (प्रसोपा) की नीति–निर्धारित की जिसे आपका प्रमुख विचार लेख कहा गया। तदुपरान्त आपने लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ के कुलपति का प्रभार संभाला। परन्तु दुर्भाग्यवश 18 फरवरी सन् 1956 में इस महान समजवादी विचारक का देहावसान हो गया। आचार्य नरेन्द्र देव बौद्ध दर्शन (बौद्ध धर्म तथा उसके सिद्धान्तों) के प्रकाण्ड पण्डित थे। उन्हें संस्कृत तथा पाली भाषाओं का ज्ञान था। फ्राँस के विद्वानों ने बौद्ध धर्म और दर्शन पर जो काम किया था उससे नरेन्द्र देव का घनिष्ठ परिचय था। किन्तु आस्था से वे बौद्ध नहीं थे। फिर भी सम्भवतः उन्हें बौद्ध चिन्तन

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की लोकोत्तरता विरोधी प्रवृत्ति से सहानुभूति थी। उनका विचार था कि आस्तिकता भारतीय संस्कृति का सार नहीं है, उसका मूल तत्व यह धारणा है कि विश्व नैतिक नियमों द्वारा शासित होता है। इसलिए नरेन्द्र देव ऐहिकवादी बन गए थे।

आचार्य नरेन्द्र देव 'बाल, पाल, लाल तथा अरविन्द घोष की पुस्तक' इन्दु प्रकाश में 'पुरानों के बदले नए दीपक' शीर्षक के अन्तर्गत सात लेखों ने मनःस्थिति को झकझोर कर समाजवाद की ओर सोचने को विवश किया।

आचार्य नरेन्द्र देव का चिन्तन मार्क्स, एंजिल्स के साथ–साथ लेनिन से भी बहुत प्रभावित हुआ। सन् 1928 में भारतीय कम्युनिस्टों ने कांग्रेस से अलग होकर मार्क्सवादी दर्शन पर अलग संस्था के निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया तथा 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' का विरोध किया तब उनकी साम्यवाद से आस्था उठ गई। वह मार्क्स पके सिद्धान्तों को पसन्द करते थे। किन्तु उसकी व्यावहारिक व्याख्याओं ने उन्हें भारतीय साम्यवादियों से दूर रखा। वह अपने राष्ट्रीय आन्दोलन के साथियों के साथ मार्क्स के मानवीय तथा जनतांत्रिक सिद्धान्तों के परिपालन में व्यस्त हो गये। सन् 1934 को आचार्य जी की अध्यक्षता में 'समाजवादी सम्मेलन' हुआ। इस सम्मेलन में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनाने का निश्चय किया गया। डा. लोहिया तथा आचार्य नरेन्द्र देव जी के आग्रह पर समाजवादी समाज बनाने के साथ–साथ पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने का ध्येय निश्चित किया गया।

सन् 1936 में आचार्य नरेन्द्र देव उ.प्र. की कांग्रेस समिति के अध्यक्ष निर्वाचित हो गये। जवाहर लाल नेहरू आचार्य जी की क्षमता के प्रति आस्थावान थे, उन्होंने उन्हें कांग्रेस कार्य समिति का सदस्य बना लिया। सन् 1937 में विधान सभा के चुनावों में उन्होंने भाग लिया तथा सदस्य निर्वाचित हो गये। कांग्रेस ने मन्त्रिमण्डल बनाने के लिए आचार्य जी से उनका सहयोगी बनने के लिए कहा गया किन्तु 'समाजवादी पार्टी की नीति' के परिणाम स्वरूप वह मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित नहीं हुए। सन् 1939 में द्वितीय महायुद्ध के सन्दर्भ में कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों ने त्यागपत्र दे दिये। गाँधी जी ने सन् 1940 में 'व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आन्दोलन' को चलाया। उत्तर प्रदेश में इसका संचालन आचार्य जी ने किया। वह संचालनकर्ता भी थे और जेल के यात्री भी। सन् 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में बन्दी

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

बनाकर उनहें अहमदनगर के किले में नजरबन्द किया गया। सन् 1946 में वह पुनः प्रान्तीय विधानसभा के सदस्य चुने गये किन्तु कांग्रेस मन्त्रिमण्डल से अलग रहे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद कांग्रेस दल के इस निश्चय ने कि किसी दूसरी राजनीतिक पार्टी का सदस्य कांग्रेस का सदस्य नहीं हो सकता, उन्हें अन्य समाजवादियों के साथ कांग्रेस छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। 'पार्टी के नासिक सम्मेलन' में कांग्रेस से अलग होने का निश्चय पुष्ट किया गया। इस निश्चय के अनुरूप आचार्य नरेन्द्र देव जी ने विधानसभा की सदस्यता से त्याग पत्र दे दिया। सन् 1948 से 1956 तक देश का राजनीतिक जीवन विभिन्न प्रकार की गतिविधियों तथा परिवर्तनों से परिपूर्ण था। उनके साथियों में से बहुत से 'समाजवादी आन्दोलन' से अलग हो गये किन्तु आचार्य जी ने समाजवादी पार्टी से अपना सम्बन्ध नहीं तोड़ा। सन् 1947 में वह लखनऊ विश्वविद्यालय तथा सन् 1952 में बनारस विश्वविद्यालय के उपकुलपति नियुक्त हुए। सन् 1952 में ही वह राज्य सभा के लिये निर्वाचित हुए। सांस्कृतिक मिशन के सदस्य के रूप में उन्होंने सन् 1952 में चीन की सद्भाव यात्रा की। धीरे–धीरे उनका स्वास्थ्य बिगड़ रहा था। वह सन् 1954 में स्वास्थ्य लाभ के लिये योरोप गये। जब आचार्य नरेन्द्र देव राज्यसभा के सदस्य थे। वह नागपुर और गया में आयोजित 'प्रसोपा सम्मेलन' के (सन् 1954–55 में अध्यक्ष थे) गए थे। 19 फरवरी सन् 1956 को मद्रास के पेनदुराई नामक स्थान पर उनका देहावसान हो गया। उनका दाह संस्कार लखनऊ (उ.प्र.) में सम्पन्न हुआ। आचार्य नरेन्द्र देव जीवन पर्यन्त नये मूल्यों के प्रति विश्वस्त रहे, उन्होंने देश के संकट के समाधान निमित्त आर्थिक शक्तियों की केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति का विरोध किया। वह समाज में व्याप्त गरीबी और सामाजिक अन्याय का उत्तरदायी 'प्रजातन्त्रीय समाजवाद' को मानते थे आपने कई बार राज्य सभा में देश हित में किसानों तथा नारी दुर्दशा सम्बन्धी प्रश्न भी उठाए ताकि इनकी समस्याओं के समाधान करा सकें।

आचार्य नरेन्द्र देव ने राष्ट्रीय आन्दोलन को 35 वर्ष तक निरन्तर सक्रिय सहयोग दिया। उन्होंने साम्राज्यवादी शक्तियों से कभी समझौता नहीं किया। उनके जीवन एवं विचारों पर उनके पिता की सात्विक मनोवृत्ति तथा बौद्ध

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दर्शन की मान्यताओं का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। उन्होंने बौद्ध साहित्य के अनुशीलन के निमित्त पाली को सीखा था। बौद्ध साहित्य ने उन्हें नैतिक चिन्तन की ओर प्रवृत्त किया। वह उदात्त गुणों की अनुकृति थे। वह समाज को उत्पीड़न से, शोषण से तथा विषमताओं से मुक्त करना चाहते थे। 'अन्याय करना और अन्याय सहना दोनों ही उन्हें अखरते थे। अन्याय के विरूद्ध क्रान्तिकारी विद्रोह की भावना उनके नैतिक जीवन का आधार थी। भारतीय समाज को वह जिस नई युग चेतना और आदर्श से परिचित करा रहे थे उनका आधार राष्ट्रीयता, जनतन्त्र और समाजवाद था। स्वतन्त्रता के लिये उन्होंने विदेशी दासता से मुक्ति का आव्हान किया। वह आर्थिक और सामाजिक समानता के आधार पर भारतीय समाज की रचना करना चाहते थे। क्योंकि उनके लिये भारतीय स्वतंत्रता का अर्थ आर्थिक और सामाजिक समानता की व्यवस्था करना था उन्होंने अन्याय के विरूद्ध अनवरत युद्ध किया। शोषित किसानों और मजदूरों के हितों के संरक्षक के रूप में उन्होंने पूँजीवाद समाज को प्रभुत्व पसे वंचित करने के लिए कठोर संघर्ष किया। वर्ग संघर्ष के प्रति उनकी आस्था उनके मार्क्सवादी प्रभाव की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। वे सामाजिक मूल्यों को नये मापदण्ड देना चाहते थे इसलिए उन्होंने मार्क्स को महान मानवतावादी की संज्ञा दी। वह समाज की कुंठाओं से मुक्त करना चाहते थे। अपने **'जीवन दर्शन'** में उन्होंने वर्तमान समाज की व्यवस्थाओं के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा है, 'वर्तमान सामाजिक व्यवस्था ने मनुष्य को एक विशेष दिशा में मोड़कर, शक्तिहीन तथा व्यक्तित्वहीन बनाकर एक दास जैसा बना दिया है।

आचार्य जी मनुष्य के नैतिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विकास में आस्था रखते थे। वह उसे निर्धनता और असुरक्षा के भय से बचाना चाहते थे। वह आम जनता के सामान्य हित के लिए सामाजिक पुनर्गठन का समर्थन करते थे। नरेन्द्र देव ने सन् 1916 में मार्क्स के साहित्य का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया। जिसने उनके चिन्तन को प्रभावित किया। मार्क्स ने जब समाजवाद को मुक्ति का द्योतक कहा तब नरेन्द्र देव ने उसे अपने चिन्तन और व्यवहार का आदर्श बना लिया। आचार्य नरेन्द्र देव यह मानते थे कि मार्क्स ने सामाजिक विकास के जो नियम हमारे सामने रखे वे सब प्राचीन काल से ही समाज में काम करते चले आ

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रहे थे। समाज की आर्थिक रचना के अनुसार, उसकी दूसरी विचार प्रणालियाँ बनती थीं, प्रकृति की शक्तियों का नवीन ज्ञान होने पर और परिणामस्वरूप उत्पादक शक्तियों का स्वरूप बदलने पर, समाज का आर्थिक ढाँचा बदलता रहा है और उससे ही समाज की रचना में सर्वांगीण परिवर्तन होता रहा है। यह परिवर्तन द्वंद्वमान ढंग से, वर्ग संघर्ष के जरिये होता रहा है।

पूँजीवादी वातावरण में पले आलोचकों के लिए समाजवाद हिंसा का दर्शन है, उसमें उच्चतर मानवीय आदर्शों की पूर्ति के लिए कोई स्थान नहीं है। समाजवाद केवल वर्ग संघर्ष की शिक्षा देता है। रोटी के प्रश्न के सहारे वैमनस्य और घृणा का प्रसार करता है। किन्तु आचार्य नरेन्द्र देव ने मार्क्स और मार्क्सवाद को मानवता का हितैषी कहा है। निर्धन की आँख के आँसू की सम्वेदना को उन्होंने समझा, साधारण से साधारण व्यक्ति के कष्ट उनके लिए पीड़ाजनक अनुभव होते थे। गरीबों व किसानों के प्रति अन्याय और उत्पीड़न को समझने की उनमें अपार शक्ति थी। इस शक्ति ने ही मार्क्स को सन्तापित जिन्दगी जीने वालों के प्रति उदार बना दिया। 'मार्क्स ने एक जगह पर कहा है कि सर्वहारा मजदूर को रोजमर्रा के भोजन की अपेक्षा शौर्य, आत्म विश्वास, स्वाभिमान और स्वातंत्रय की कहीं ज्यादा जरूरत है। समाजवाद रोटी का सवाल नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक आन्दोलन है जो संसार में एक महती विचारधारा को प्रभावित करता है। इस सांस्कृतिक आन्दोलन का केन्द्र मानव है। मानव सर्वोपरि है। जो सिद्धान्तवाद या विचार चाहे वह कोई धर्म हो या दर्शन या अर्थशास्त्र मानव उत्कर्ष को घटाता है यह मार्क्स को मान्य नहीं है। वह सही अर्थों में मानवता की सेवा करने के लिए उत्सुक है। पूँजीवादी प्रथा के पोषक धर्म को शोषण के शक्तिशाली शस्त्र के रूप में प्रयोग करते हैं। मार्क्स ने मानवता की सेवा का यथार्थवादी मार्ग अपनाया है। 'मार्क्स ने जनता की खोई हुई मानवता को फिर से पाने का उपाय ही नहीं बताया, बल्कि उसको इस कार्य के लिए तैयार भी किया। कार्ल मार्क्स ने मानवता को पुनः प्रतिष्ठित करने के प्रयत्नों को नहीं छोड़ा। उसका दर्शन एक जीता–जागता दर्शन है, जिससे मनुष्य को एक नवीन स्फूर्ति और प्रेरणा मिलती है जो आज समाज में पद–दलित, तिरस्कृत, अशिक्षित और दरिद्र हैं उनमें नये जीवन का संचार करना, उनके हृदय में एक नवीन ज्योति को जगाना मार्क्स के दर्शन का ही काम है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आचार्य नरेन्द्र देव जी का समाजवाद पूर्णरूपेण एक नैतिक और आध्यात्मिक विशिष्टता लिए हुए है। आचार्य नरेन्द्र देव गाँधी जी के सम्पर्क में रहने के बाद भी वर्ग संघर्ष के प्रति अपनी आख्या को समाप्त नहीं कर पाये। वह वर्ग संघर्ष को समाजवादी दर्शन का अभिन्न अंग मानते थे। समाजवाद जहाँ शोषण से मुक्ति का आव्हान करता है, वहीं मजदूरों से यह भी अपेक्षा करता है कि नैतिक विकास हो, यही समाजवाद की सांस्कृतिक भूमिका है।

आचार्य नरेन्द्र देव की जनतन्त्रीय व्यवस्था में घोर आस्था थी। वह चिंतन और व्यवहार दोनों में ही जनतन्त्रीय व्यवस्था को अत्यधिक पसन्द करते थे। 'उन्होंने कभी अपने को संस्था से ऊँचा नहीं समझा। उनका मत था कि किसी संगठन का महत्व उसके उच्च नेताओं द्वारा नहीं, बल्कि उसे साधारण कार्यकर्ताओं द्वारा आँका जाता है। उनकी बहुजन समाज के प्रति आस्था थी, जनहित की वृद्धि ही उनके जीवन का लक्ष्य था। वे जनमत का सदा ध्यान रखते थे और जन जागृति पर उनका पूरा विश्वास था। आचार्य जी जनतन्त्र को सर्वोत्तम शासन पद्धति के साथ–साथ सर्वोत्तम जीवन विधि भी मानते थे।' आचार्य जी जिस प्रजातन्त्र की कल्पना करते हैं वह पूँजीवादी प्रजातन्त्र से सर्वथा भिन्न है। कानून की निगाह में शोषक और शोषित दोनों ही समान हैं, किन्तु निर्धन को प्राप्त होने वाले न्याय की क्षमता पर सन्देह होने लगा है। यह विषमताओं से मुक्ति के लिए जनतन्त्र को तैयार करते हैं। वह समाजवाद को ही सच्चे जनतन्त्र की आदर्श व्यवस्था मानते हैं।

भारतीय सन्दर्भ में राष्ट्रीयता की कोई निश्चित एवं तार्किक व्याख्या देना सम्भव नहीं है। जब कोई समुदाय अपने को एक दूसरे से पृथक मानने लगता है और परस्पर उसमें एकता के भाव जन्म लेने लगते हैं तब राष्ट्र में गुंथने के लिए राष्ट्रीयता का जन्म होता है। इसी राष्ट्रीयता के कारण भारत में स्वतन्त्रता का सूर्य चमका। राष्ट्रीयता हमें अपनी भलाई की तो प्रेरणा देती है किन्तु उसमें दूसरे के अहित की कल्पना नहीं होती। सच्ची राष्ट्रीयता में जनतन्त्र तथा समाजवाद दोनों का ही उचित समन्वय होता है। 'हमको भूलना नहीं चाहिये कि राष्ट्रीयता और जनतन्त्र के भावों ने ही हमको स्वतन्त्रता दिलायी है। राष्ट्रीयता का अर्थ हिन्दू या मुस्लिम राष्ट्रीयता नहीं है। एक देश की भौगोलिक सीमा के भीतर रहने वाले विविध धर्म और बिरादरी

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के लोग अपनी विभिन्नता का अनुभव करते हैं तभी राष्ट्रीयता जन्म लेती है।' आचार्य जी राष्ट्रीयता के प्रसंगों में ही साम्यवादियों से पृथक चिन्तन करते हैं। उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास को अपने संघर्षपूर्ण कार्यों से लिखा है। आचार्य जी ने अपने सभी समाजवादी साथियों से देश के स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने का आग्रह किया। क्योंकि वह यह स्वीकार करते थे कि स्वतन्त्रता समाजवाद की आवश्यक उपलब्धि है।'

वह गाँधी जी के प्रभाव के कारण 'सत्याग्रह आन्दोलन' को सजीव सहयोग प्रदान कर रहे थे। वह व्यापक रूप से अहिंसा के प्रयोग का समर्थन नहीं करते, क्योंकि उन्होंने स्वयं गाँधी जी से चर्चा करते समय कहा था, मैं सत्य की तो सदा आराधना करता हूँ, किन्तु इसमें मुझ को सन्देह है कि बिना कुछ हिंसा के राज्य की शक्ति हम अंग्रेजों से छीन सकेंगे।' इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वह अनैतिक साधनों के प्रयोग का समर्थन करते हैं। आचार्य जी का समाजवाद एक निश्चित नैतिक आधार पर टिका हुआ है। उन्हें नैतिकता का उपहास उड़ाने वाले समाजवादियों से सदैव कुढ़न अनुभव होती थी। वह इसे समाजवाद का विकृत रूप मानते थे। आचार्य नरेन्द्र देव ने लिखा है कि 'वह समाजवाद जिसकी आधारशिला नैतिकता थी अब नैतिक जीवन का मजाक उड़ाने लगा। साधन की पवित्रता कोई बात ही नहीं रही। सत्य ही सब कुछ है, जिसके लिए सब साधनों का उपयोग किया जा सकता है। यदि साध्य की प्राप्ति होती है तो मानना पड़ेगा कि साधन ठीक है। किन्तु लोग यह भूल गये कि इसका क्या ठिकाना है कि कब साध्य की प्राप्ति होगी। साधन की प्राप्ति में कभी–कभी सदियाँ गुजर जाती हैं। नैतिकता के इस इतिहास के कारण समाजवाद का विकृत रूप हो गया तथा राजनीति शक्ति पाने का अखाड़ा मात्र बन गई।

आचार्य नरेन्द्र देव ने समाजवाद को नये युग के शुभ सन्देश के रूप में स्वीकार किया। वह इस परमाणु युग में हिंसा को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर अस्वीकार करते हैं। वह मानते थे कि युद्ध किसी समस्या का हल नहीं हैं अतः इसे गैर कानूनी माना जाना चाहिये। इन सामाजिक मान्यताओं को स्वीकार करने के साथ–साथ आचार्य नरेन्द्र देव ने कृषि प्रधान देश की जनता की समस्याओं का विशेष रूप से अध्ययन किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश के किसानों और मजदूरों को संगठित किया तथा उनके संगठनों

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

को कांग्रेस से सम्बद्ध किया। उन्होंने किसानों के आर्थिक हितों की रक्षा के लिए किसान सभा के संगठनों को व्यवहारिक रूप देने हेतु सन् 1939 में भारतीय किसान सभा के सम्मेलन की अध्यक्षता की। उनके सभापतित्व में इस किसान सभा ने राजनीतिक विषयों में कांग्रेस का समर्थन किया। किसानों को समाजवादी समाज की संरचना में समान भागीदार बनने के लिए सहकारिता पर जोर दिया। भारत को आर्थिक नियोजन के सम्बन्ध में उनका यह निश्चित मत था, कि 'भूमि की उत्पादन शक्ति को बढ़ाया जाये तथा कृषि सहकारी आधार पर संगठित की जानी चाहिए। सभी किसानों के ऋणों को समाप्त कर देना चाहिये तथा किसानों के लाभ के लिये कम ब्याज पर धन देने की व्यवस्था हो।'

नरेन्द्र देव पर जॉज सोरेल के 'आम हड़ताल' के श्रम संघवादी सिद्धान्त का प्रभाव पड़ा था; और वे भारत में राजनीतिक मुक्ति के संघर्ष में इसे अपनाने के पक्षधर थे। उन्हें विश्वास था कि आम हड़ताल भावात्मक–विचारात्मक तथा कार्यनीतिक दोनों ही दृष्टियों से लाभदायक है। आप भारत के कृषक पुनर्निर्माण में विश्वास करते थे। वे चाहते थे कि किसानों के आर्थिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए किसान सभाएं व संगठन बहुत जरूरी हैं। आपने ग्राम विकास के लिए 'साक्षरता अभियान' का समर्थन किया ताकि किसानों का विशाल जन समुदाय समाजवादी विचारधारा से अनुप्राणित हो सके। आप लोकतांत्रिक साधनों (संसदीय साधनों, सत्याग्रह, हड़ताल तथा आम हड़ताल) के भी प्रबल पक्षधर थे। इस रूप में आपको समाजवादी आन्दोलन का मेरूदण्ड कहना उचित है।

एक वास्तववादी होने के नाते, वे नहीं चाहते थे कि मजदूरों तथा किसानों को राष्ट्रीय स्वतन्त्रता तथा लोकतंत्र के खोखले नारों से मूर्ख बनाया जाए। उन्होंने जो मजदूरों व किसानों को स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में साथ मिलाने का प्रयत्न किया, इतिहास में इसके लिए उन्हें दलित लोगों के राजनीतिक तथा आर्थिक उद्धार के दृढ़ समर्थन के रूप में सदैव याद किया जायेगा। उनके निकट राजनीति और आचार शास्त्र में निकट का तालमेल है। यही कारण है कि उनकी राजनीति में निम्न स्तरीय कार्य साधकों और छल योजनाओं के लिए कोई स्थान नहीं है। उन्होंने सदैव पद का त्याग किया और किसानों, मजदूरों की जनसेवा को सर्वोपरि मानते हुए उसे वरीयता दी।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

यदि समाजवादी उद्देश्यों के लिए उन्हें राजनीतिक संघर्ष भी करना पड़ा तो वह कभी पीछे नहीं हटे।

निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

(1) एक कुशल राजनीतिज्ञ होने के बावजूद भी आचार्य नरेन्द्र देव कभी भी सत्ता की ओर आकर्षित नहीं हुए थे।

(2) आचार्य जी का राजनीतिक जीवन समाजवादी चिन्तन से परिपूर्ण रहा इसलिए वे आजीवन सामाजिक मूल्यों की प्रतिस्थापना के लिए सतत संघर्ष करते रहे।

(3) समाजवादी विचारक एवं भारतीय किसान सभा के संस्थापक होने के बावजूद उन्होंने समाजवादी दल तथा कृषक मजदूर पार्टी के विलय का विरोध किया।

(4) गाँधी जी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के बावजूद भी आचार्य जी की चिन्तनधारा मार्क्सवादी थी।

(5) मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होते हुए भी आचार्य नरेन्द्र देव मार्क्स के पूँजीवादी विचारों का पूर्ण समर्थन नहीं करते थे। वे यह मानते थे कि समाज में पूँजीपतियों तथा सर्वहारा के अतिरिक्त अन्य वर्ग भी होती हैं।

(6) आचार्य जी कृषण–पुनर्निर्माण के समर्थक थे; परन्तु वे इस कार्य में समाजवादी विचारधारा को लाना आवश्यक मानते थे।

(7) आचार्य जी की विचारधारा में जो धार्मिक भाव है; उसका सम्बन्ध एक ऐसे धर्म से है जो सब प्राणियों को अपने में तथा सब प्राणियों में अपने को देखने के लिए प्रेरित करे। इस अर्थ में वे धर्मनिरपेक्षता की बात को लाना चाहते थे।

(8) आचार्य नरेन्द्र देव के राजनीतिक विचार और उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व समाजवादी चिन्तन से ओतप्रोत तथा परिपूर्ण है।

<u>राजनीतिक विचार</u>

१. संविधान में दोषों का अन्वेषण

२. लोकतंत्र एवं स्वतंत्रता

३. विकेन्द्रित लोकतंत्र

४. योजनाबद्ध आर्थिक विकास

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

५. धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद

I nHk%

लाल मुकुट बिहारी (2006) आचार्य नरेन्द्र देव– युग और नेतृत्व; पदाम प्रकाशन, बॉम्बे।

वर्मा बी.पी. (2007) आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायन अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

शर्मा एच.डी. (2007) भारत में समाजवादी आन्दोलन,
महरोत्रा एन.सी. रेडियेन्ट पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

सिंह श्यामधर (2008) आचार्य नरेन्द्र देव एवं समाजवादी दर्शन, काशी विद्यापीठ प्रकाशन, वाराणसी।

सम्पूर्णानन्द (2008) समाजवाद, काशी विद्यापीठ वाराणसी, प्रकाशन, काशी।

सक्सेना जगदीश (2010) प्रयोगवाद एवं नरेन्द्र देव, साहित्यालोचन प्रकाशन, कानपुर।

सक्सेना एस.सी. (2010) आचार्य नरेन्द्र देव एवं बौद्ध धर्म दर्शन, परिशोध प्रकाशन, चण्डीगढ़

श्रीवास्तव प्रमोद (2013) आधुनिक राष्ट्रीय चेतना और साहित्यः नरेन्द्र देव की दृष्टि में, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद।

श्रीवास्तव जयन्तीप्रकाश (2014) शिक्षा, समाज और भाषा, ज्ञानोदय प्रकाशन, सीतापुर (उ.प्र.)

सक्सेना राकेशधर (2015) आचार्य नरेन्द्र देव और समाजवाद, समता प्रकाशन (प्रथम संस्करण), पटना (बिहार)

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies